Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 4 ~ Issue 1 (2014)pp: 45-50
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

स्वामी सहजानंद सरस्वती की राजनैतिक विचार यात्रा

डॉ० अशोक कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर
राजनितिक विज्ञान राजकीय महाविद्यालय टप्पल अलीगढ़

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त इतिहासकार रामशरण शर्मा एक बार अपनी सोवियत संघ की यात्रा का जिक्र करते हुए बताते हैं कि पटना से 30 कि.मी पश्चिम बिहटा में महात्मा गाँधी के बाद सबसे अधिक सम्मान से जिस नेता का नाम लिया जाता था, वे थे स्वामी सहजानन्द सरस्वती। सोवियत संघ के विद्वानों का मानना था कि महात्मा गाँधी के पश्चात किसानों को जमीनी स्तर पर संगठित करने वाले सबसे लोकप्रिय नेता स्वामी सहजानन्द सरस्वती ही थे। गाँधी जी के 'साबरमती आश्रम' की तरह स्वामी जी के पटना के नजदीक बिहटा स्थित 'सीताराम आश्रम' की महत्वूपर्ण भूमिका थी। लेकिन ये दोनों आश्रम दो स्वाधीनता आन्दोलन के दो रास्तों के भी प्रतीक हैं। एक 'मास' तो दूसरा 'क्लास' आधारित राजनीति के पक्षधर थे।

स्वामी सहजानन्द सरस्वती की मृत्यु 61 वर्ष की अवस्था में 26 जून 1950 को हुई थी। उनका जन्म गाजीपुर में हुआ था तथा बचपन का नाम नवरंग राय था। बेहद कम उम्र में ही नवरंग राय ने सन्यास ग्रहण कर लिया। सन्यास के पश्चात उनका नाम पड़ा स्वामी सहजानन्द सरस्वती। उन्होंने देश के कई हिस्सों की यात्रा की, हिन्दू धर्मग्रंथों का विषद अध्ययन किया।

अपने प्रारम्भिक दिनों में स्वामी सहजानन्द सरस्वती ने, जैसा कि उस समय प्रचलन था, जातीय संगठन भूमिहार ब्राह्मण सभा, में काम करना शुरू किया। लेकिन बहुत जल्द ही उनका इन सभाओं से मोहभंग हो गया। इन सभाओं की उपयोगिता जमींदार अपने हितों को आगे बढ़ाने के लिए किया करते थे। उन्हें खुद इसका अनुभव हुआ " जातीय सभाएँ पहले तो सरकारी अफसरों को अभिनन्दन पत्र देने और राजभक्ति का प्रस्ताव पास करने के लिए बनी थी। इस प्रकार कुछ चलते-पुर्जे तथा अमीर, जातियों के नाम पर सरकार से अपना काम निकालते थे।"

जातीय सभाओं की सीमाओं को समझ उन्होंने अपने अनुभव से किसानों के दुःख को पहचाना। इस दुःख-तकलीफ की असली जड़ जमींदारी प्रथा थीं। जमींदारी के विरूद्ध संघर्ष ज्यों-ज्यों आगे बढ़ने लगा जातीय सभाएँ समाप्त होती गयी। बिहटा स्थित सीताराम आश्रम के प्रति जमींदारों में संषय पैदा होने लगा।

1929 में उन्होंने भूमिहार ब्राह्मण सभा भंग कर दी और 'किसानों को फंसाने की तैयारियां' शीर्षक पुस्तिका में जाति व धर्म के नाम पर चलने वाले ढ़कोसलों और संगठनों को राष्ट्रीयता में बाधक बताया। स्वामी सहजानन्द सरस्वती द्वारा 'भूमिहार ब्राह्मण सभा' पर यह ऐसा घातक प्रहार था जिससे वो सभा फिर कभी दुबारा अपने सर न उठा सकी।

स्वामी सहजानन्द सरस्वती अपने प्रारम्भिक दिनों में महात्मा गाँधी से बेहद प्रभावित थे। पटना में में उनकी मुलाकात भी उनसे हुई । उन्हीं से प्रभावित होकर वे सन्यास का जीवन छोड़ कांग्रेस और स्वाधीनता आन्दोलन में

शामिल हुए लेकिन किसानों के मसले जमींदारों के खिलाफ स्पष्ट स्टैंड न लेने की वजह से वे धीरे-धीरे उनसे दूर होते चले गए। 1934 मे भूकंप से तबाह किसानों से दरभंगा महाराज द्वारा लगान वसूलने के सवाल पर गाँधी जी से निर्णायक विच्छेद हो गया।

महात्मा गाँधी चाहते थे कि अँग्रेजों के खिलाफ सभी तबकों का एक संयुक्त मोर्चा बने। स्वामी सहजानन्द सरस्वती का मानना था कि अँग्रेजों का औपनिवेशिक शासन जमींदारों पर टिका है। अँग्रेजी साम्राज्यवाद का देशी आधार यही जमींदार है अतः इन्हें यदि उखाड़ फेंका जाए तो देश को औपनिवेशिक शासन से मुक्ति मिल जाएगी। कथा सम्राट मुंषी प्रेमचंद भी अपने अंतिम दिनों में लगभग ऐसे ही निष्कर्ष पर पहुँच रहे थे। उनकी कहानी 'आहूति' इसका परिचायक है जिसमें वे साम्राज्यवाद के देशी आधार यानी जमींदारी का प्रश्न उठा रहे थे।

1936 में अखिल भारतीय किसान सभा का जब गठन हुआ स्वामी सहजानन्द सरस्वती उसके राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाए गये। 1937 में प्रांतीय सरकारों का गठन होता है। किसान आन्दोलन में तेजी आती है। जमींदारों के विरूद्ध संघर्ष तेज होने लगता है। बिहार में महापंडित राहुल सांकृत्यायन, जनकवि नागार्जुन, जयप्रकाश नारायण, लोकाख्यान बन चुके नक्षत्र मालाकार, कार्यानन्द शर्मा , यदुनन्दन शर्मा सभी स्वामी सहजानन्द सरस्वती के साथ चले आते हैं। बड़हिया टाल आन्दोलन, नवादा का रेवड़ा सत्याग्रह, देवकी धाम की लड़ाई, अमवारी सत्याग्रह ये सब किसान आन्दोलन के प्रेरणादायी अध्याय हैं। गुजरात से इंदूलाला याग्निक, आंध्र प्रदेश से एन.जी रंगा, केरल से ई.एम.एस नंबूदिरीपाद, बंगाल से बंकिम मुखर्जी ये सभी स्वामी सहजानन्द सरस्वती की अगुआई स्वीकारते हैं। किसान सभा में स्वामी सहजानन्द सरस्वती समाजवादी व वामपंथी दोनों एक साथ शामिल थे। देश भर में किसान आन्दोलन खड़े होने लगे। इन आन्दोलनों से पैदा हुए भय का परिणाम था कि बिहार व उत्तरप्रदेश के मुस्लिम जमींदारों ने, जिन्ना के नेतृत्व में, 1940 के लाहौर अधिवेशन में पाकिस्तान की माँग उठायी। पाकिस्तान आज यदि फिरकापरस्त ताकतों का गढ़ बना हुआ है उसका कारण है बड़े-बड़े जमींदारियों का आज तक बरकरार रहना।

राष्ट्रीय नेताओं में स्वामी सहजानन्द, सुभाषचंद्र बोस के करीब आए। सुभाषचंद्र बोस को कांग्रेस अध्यक्ष चुने जाने में स्वामी जी ने उनका साथ दिया था। कांग्रेस से हटने के बाद जब सुभाषचंद्र बोस द्वारा बनायी गयी 'फारवर्ड ब्लॉक' के साथ मिलकर 1940 के कांग्रेस के रामगढ़ अधिवेशन के समानान्तर किए गए ऐतिहासिक 'समझौता विरोधी सम्मेलन' आयोजित किये जिसमें महात्मा गाँधी की की सभा से अधिक भीड़ थी।

स्वामी सहजानन्द सरस्वती का झुकाव धीरे-धीरे मार्क्सवाद की ओर होता जा रहा था। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान 1941 में जब हिटलर ने सोवियत रूस पर हमला किया तो युद्ध का चरित्र बदल सा गया। कम्युनिस्ट पार्टी ने 'पीपुल्स वार' का नारा दिया। फासिज्म के खतरे से सोवियत रूस को बचाने के लिए स्वामी सहजानन्द सरस्वती भी 'पीपुल्स वार' के नारे के साथ हो गए। जवाहर लाल नेहरू सरीखे अन्तर्राष्ट्रीयतावादी समझे जाने वाले नेता तक इस निर्णायक मौके पर पीछे हट गए थे।

इस नारे का सबसे अधिक दुष्परिणाम स्वामी सहजानन्द सरस्वती को झेलना पड़ा। रूस को बचाने के लिए अँग्रेजों के सहयोग की तात्कालिक रणनीति काफी महंगी पड़ी। अँग्रेजों को सहयोग का मतलब था जमींदार विरोधी संघर्ष का स्थगित होना। लेकिन फिर जल्द ही संभल गया। 1945-46 आते-आते किसान सभा के मजबूत आधार वाले राज्यों में ताकतवर किसान आन्दोलन खड़े हो गए। आंध्र प्रदेश से ऐतिहासिक तेलंगाना आन्दोलन, बंगाल का तेभागा, केरल का पुनप्रा वायलर, बिहार का बकाष्त संघर्ष, आसाम का सुरमा-वैली का आन्दोलन। पूरे देश में किसान उठ खड़े होने लगे। जमींदार विरोधी यह धारा यदि अपनी तार्किक परिणति तक पहुँचती तो भारत का चेहरा ही कुछ और होता

*Corresponding Author: डॉ० अशोक कुमार

किसानसभा के कांग्रेस से मतभेद -

(i) कांग्रेस पर जमींदार वर्ग का प्रभुत्व था। किसान जमींदार से पैमाल थे।

(ii) कांग्रेस साम्राज्यवाद से हर पग पर समझौता चाहती थी, संघर्ष पंगु हो जाता था। इरविन समझौता, लिनलिथगो समझौता, क्रिप्स समझौता, कैबिनेट मिशन समझौता, बैवल प्लान, माउंटबेटन फार्मूला इसके उदाहरण हैं।

(iii) साम्राज्यवाद से मिली-जुली कुश्ती की अवधि में कांग्रेसी सामंत विरोधी संघर्ष को औपनिवेशिक स्वराज्य तक मुल्तवी रखना चाहते थे।

(iv) स्वामी जी डोमिनियन स्टेट्स को पूर्ण आजादी की फाँसी कहते थे।

समाजवादी पार्टी से मतभेद के कारण -

(i) कांग्रेस समाजवादी पार्टी अन्ततोगत्वा कांग्रेस की ही दुमछल्ला बनी रही।

(ii) इसने गांधीवाद द्वारा स्वीकृत लक्ष्मण रेखा के अधीन ही काम किया।

(iii) वर्ग-संघर्ष की जगह तोड़-फोड़, शोहरत, दुस्साहस, मीडिया में प्रचार का रास्ता अपनाया।

(iv) इसके कार्यकर्ता शहरी मध्यम वर्ग थे, किसान कम थे।

(v) पार्टी का खर्च, सामग्री सेठ देते थे।

(vi) क्रांतिकारी चरित्र खोकर व्यक्तिवादी कारनामों में लिप्त हो गया।

(vii) कार्यकर्ताओं से नेताओं का संवाद गैप हो गया।

(viii) वर्ग-संघर्ष त्यागने के कारण क्रांतिकारी परिप्रेक्ष्य समाप्त हो गया।

(ix) किसान सभा को अपना जन संगठन बनाना चाहा एवं विफल होने पर सभा पर कब्जा करना चाहा, विफल होने पर सभा में विभाजन करा दिया।

(x) संयुक्त वामपक्षी मोर्चा का नेता सुभाष को मानने से इनकार कर दिया और गांधी को नेता माना।

(xi) गांधी के संरक्षण में और सुभाष विरोध के नाम पर अंग्रेजों के कोप से बचाव किया।

(xii) यह कांग्रेस की बी टीम साबित हुई। नेहरू ही इस ग्रुप के आराध्य देव थे। 1946 तक लोहिया का निवास आनन्द भवन इलाहाबाद ही था।

कम्युनिस्ट पार्टी से किसान सभा के मतभेद के कारण -

(i) किसान सभा को अपनी पार्टी का जन संगठन बनाने का पार्टी का उपक्रम।

(ii) पाकिस्तान को समर्थन।

(iii) राष्ट्रवादी परिप्रेक्ष्य का अभाव।

(iv) सुभाष को वाम-मोर्चा का नेता मानने से इनकार।

(v) गांधी को ही आजादी की लड़ाई भर नेता समझना।

(vi) कांग्रेस को संयुक्त मोर्चा समझने की भूल करना।

(vii) वाम-मोर्चे के गठन से आना-कानी।

(viii) जन संस्कृति से टकराव।

(ix) अन्तर्राष्ट्रीयता का महत्व ज्यादा।

*Corresponding Author: डॉ० अशोक कुमार

(x) धर्म की प्रवंचना की जगह धर्म से ही टक्कर।

(xi) द्वितीय विश्वयुद्ध काल में 'अधिक अन्न उपजाओ' आंदोलन में क्रांति का काम छोड़ कर लगना।

(xii) कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा स्वामी जी पर व्यक्तिवाद, निम्न पूँजीवादी मनोवृत्ति एवं तानाशाही का आरोप।

(xiii) गरीब किसानों के साथ सम्मिलित नेतृत्व मान कर न एकताबद्ध होना।

(xiv) सर्वहारा के यूनियन के साथ किसान सभा भी खुद के हाथ रखना, स्वामी जी स्वतन्त्रता और बराबर की हैसियत की किसान सभा सर्वहारा वर्ग की पार्टी के समकक्ष चाहते थे। यह बराबरी कम्युनिस्ट पार्टी को मंजूर नहीं थी। स्वामी जी किसान सभा को पार्टी के अधीन नहीं चाहते थे।

(xv) द्वितीय विश्वयुद्ध को कम्युनिस्ट पार्टी जनता की लड़ाई कहती थी। स्वामी जी 1943 ई. से इसे जनता की लड़ाई नहीं मानते थे।

(xvi) स्वामी जी का विचार था कि अंग्रेजों के युद्ध प्रयत्नों की न तो मुखालफत करनी है और न मदद करनी है। कम्युनिस्ट पार्टी मदद के पक्ष में थी। इस अवधि को जमींदार विरोधी संघर्ष पर पार्टी विराम चाहती थी। स्वामी जी 1943 से किसान फ्रंट पर गति चाहते थे। कम्युनिस्ट रूस की रक्षा के नाम पर रूस के दोस्त अंग्रेजों के खिलाफ किसी किस्म की हड़ताल नहीं चाहते थे। भारत की कम्युनिस्ट पार्टी पर इंगलैंड एवं रूस की कम्युनिस्ट पार्टी का आदेश चलता था। देशी हित गौण हो गया था।

(xvii) कम्युनिस्ट पार्टी जिन्ना की वकालत करती थी (स्वामी जी का 15 अप्रैल 1945 का शकूराबाद का भाषण, 1945 मैमन सिंह का भाषण, बैजवाड़ा 1944 का भाषण)

अंग्रेजी हुकूमत के समय भारत में कम्युनिस्ट पार्टी के विफल होने के निम्न कारण थे -

(i) देश हित की कीमत पर अन्तर्राष्ट्रीय नीति को तरजीह।

(ii) राष्ट्रवादी परिप्रेक्ष्य से मरहूम रहना।

(iii) भारत में क्रांति के लिए रूस पर निर्भर करना।

(iv) रूस-ब्रिटेन संधि का भारत के किसान-मजदूर आंदोलन की गति पर विपरीत प्रभाव पड़ना।

(v) जन संस्कृति, लोकभाषा, परम्परा, धर्म से टकरा कर अलोकप्रिय होना।

(vi) राष्ट्र के अंदर कई राष्ट्र की पश्चिमी अवधारणा से अभिभूत होना।

(vii) जनसंघर्ष के सैलाब को आधुनिक राष्ट्रवाद का कारण नहीं समझ विदेश पठित बाबू वर्ग को ही राष्ट्रीयता का कारण समझने की गलत दृष्टि।

(viii) इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या से भारतीय असहमति।

(ix) किसान को क्रांति का प्रधान बल, गाँव को समरभूमि न समझना।

(x) पाकिस्तान का समर्थन।

(xi) सुभाष की शिकस्त में गांधी का साथ देना। सुभाष की शिकस्त भारत में वाम की शिकस्त साबित हुई।

(xii) अन्तत: गांधी के हाथ देशद्रोही का खिताब पाना, ठगा जाना।

(xiii) गांधी के समझौतावादी रुख का पर्दाफाश न करना।

(xiv) वाम मोर्चा न बनाना।

(xv) शासक वर्ग का ठीक-ठीक चरित्र-चित्रण न करना। 1940 के दशक का शासक वर्ग निश्चय ही दलाल अपने चरित्र में था। इसे राष्ट्रीय बुर्जुआ समझने से ही गांधी का नेतृत्व कम्युनिस्ट पार्टी को कबूल हुआ।

*Corresponding Author: डॉ० अशोक कुमार

(xvi) चीनी क्रांति का न तो खुद मूल्यांकन करना और न स्वामी जी की किताब 'क्रांति और संयुक्त मोर्चा' के चीनी क्रांति के वर्णन एवं सीख से सबक लेना।

फारवर्ड ब्लाक से मतभेद के कारण -

सुभाषचंद्र बोस आजादी की लड़ाई के दरम्यान सबसे अधिक इज्जत स्वामी सहजानन्द को ही प्रदान किए। वे अन्त तक यह मानते रहे कि 1940 के दशक में पूरे देश को यदि कोई नेतृत्व क्रांति की सफलता के निमित्त दे सकता है तो वह हैं स्वामी सहजानन्द। जब गांधी अंग्रेजों से हिले-मिले थे सुभाष और स्वामी सहजानन्द ने 19-20 मार्च को रामगढ़ में एक विशाल समझौता विरोधी सम्मेलन किया जिसमें बकौल मथुरा मिश्र एवं रामविलास शर्मा इस सभा में दो लाख व्यक्ति शरीक हुए। डालमिया, गया काटन मिल मालिक, राजा कामाख्या नारायण रामगढ़, आदिवासी जयपाल सिंह के समर्थन और बेइंतहा खर्च के बावजूद गांधी की सभा सूनी हो गई। सारी भीड़ सुभाष की सभा में आ गई। 'अंग्रेजो भारत छोड़ो' संघर्ष की शुरुआत रामगढ़ से 19 मार्च 1940 से की गई, बंबई, 9 अगस्त, 1942 की बात बेतुकी है। देश सुभाष के नेतृत्व में अंग्रेजों से 1940 से ही लड़ रहा था। इस सभा के बाद स्वामी जी के तीन भाषण पटना सिटी मंगल तालाब, बिहार शरीफ और बाँकीपुर पटना में क्रमश: 7, 10 और 19 अप्रैल को हुए। अंग्रेजों से तुरंत भिड़ जाने के स्वामी जी के आह्वान पर उन्हें राष्ट्रद्रोह के अपराध में तीन साल की सजा हुई।

स्वामी सहजानन्द सरस्वती किसानों पर जमींदारों का जो वैचारिक प्रभाव या ग्राम्शी के शब्दों में कहें 'कल्चरल एँड आईडियोलाजिकल हेजेमनी' था उससे मुक्त करना चाहते थे। स्वामी सहजानन्द की चिंता को कुछ इन शब्दों से समझा जा सकता है " हमने अनुभव किया है कि धनिकों और सत्ताधारियों की तड़क, भड़क और साज सामान को देख कर ही उनका रोब किसानों पर जमाया जाता है। लोग कहते हैं कि वह बड़े जर्बदस्त हैं। देखिए न उनका प्रभाव, उनका चेहरा, उनकी सकल सूरत, उनके महल, उनकी मोटरें और दूसरे सामान? इससे गरीब और चिथड़े में लिपटा किसान सचमुच धोखे में पड़के डरने लगता है। वह उन्हें अच्छा, बड़ा और आदरणीय समझ बैठता है। गुरू, पंडित, पीर और मौलवी भी अमीरों की ही वकालत करते हैं और कहते हैं कि उनसे दबना चाहिए, डरना चाहिए। उन्हें भगवान ने बड़ा और तुम्हें छोटा बनाया है। "

धर्म के नाम पर किए जा रहे पाखण्ड के विरूद्ध स्वामी सहजानन्द सरस्वती ने निर्ममतापूर्वक संघर्ष चलाया "जिस देश के परलोक और स्वर्ग-बैकुंठ का ठेका निरक्षर एवं भ्रष्टाचारी पंडे-पुजारियों के हाथ में हो, कठमुल्ले तथा पापी पीर-गुरूओं के जिम्मे हो उसका तो ' खुदा ही हाफिज' है।" वे धर्म को निहायत व्यक्तिगत वस्तु मानते थे " धर्म तो मेरे विचार से सोलहो आना व्यक्तिगत चीज वस्तु है जैसे अक्ल, दिल, आँख, नाक आदि। दो आदमियों की एक ही बुद्धि या आँख नही हो सकती तो फिर धर्म कैसे दो आदमियों का एक होगा?"

भारत के धर्म व जाति के सम्बन्ध में पश्चिम की एक खास तरह की समझ रही है। स्वामी सहजानन्द सरस्वती उस समझ के लिए चुनौती की तरह थे। वाल्टर हाउजर के छात्र एवं स्कॉलर विलियम पिंच की यह टिप्पणी द्रष्टव्य है " एडवर्ड सईद की परिपे्रक्ष्य में बदलाव लाने वाली प्रख्याति पुस्तक 'ओरियेंटलिज्म' ने 'जाति' व 'धर्म' को अपरिर्वतनीय श्रेणियों के बतौर देखने की ओर इशारा किया। यानी हिन्दूइज्म भारत को, यदि हेगलीय या मार्क्सवादी अर्थ में कहें तो, इतिहास की मुख्य धारा में प्रवेश करने से रोक रही है। 1980 के मध्य से मुझे ऐसा लगने लगा कि स्वामी सहजानन्द सरस्वती (उनके सन्यासी जीवन की गतिशीलता ने) के व्यक्तित्व ने ऐसी पुरानी धारणाओं पर हमेशा के लिए चुनौती पेश कर दी है।"

सन्दर्भ सूचि:

1. अब क्या हो. : स्वामी सहजानंद सरस्वती, लोक प्रकाशन गृह, दिल्ली, 2001.
2. आज का भारत: रजनी पाम दत्त, ग्रंथ शिल्पी,दिल्ली, 2004.
3. आजादी री अलख: (सं.) मूलदान देपावत, प्रकाश अमरावत, राजस्थानी साहित्य एवं संस्कृति जनहित प्रन्यास, बीकानेर, 1998.
4. आधुनिक सामाजिक आंदोलन : कृष्ण बिहारी मिश्र, आर्य बुक और आधुनिक साहित्य डिपो, दिल्ली, प्र.सं. 1972.
5. आधुनिक भारत: सुमित सरकार, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2004.
6. उत्तर प्रदेश में किसान आंदोलन : महेन्द्र प्रताप, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1988.
7. एलिमेंटरी अस्पेक्ट्स ऑफ कोलानिअल इंडिया : रणजीत गुहा, ऑक्सफोर्ड पीजेंट इंसरजेंसी इन यूनिवर्सिटी प्रेस, दिल्ली, 1983.
8. किसान, राष्ट्रीय आन्दोलन और : वीर भारत तलवार, नार्दर्न बुक प्रेमचंद (1918-22) सेंटर, दिल्ली, 1990.
9. किसान विद्रोह, कांग्रेस और अंग्रेजीराज: कपिल कुमार, मनोहर पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 1991.
10. किसान संकट आल्हा : राधाकृष्ण ग्रामीण विशारद, ग्राम साहित्य प्रकाशन मंडल, गोरई,अलीगढ़, 1947.
11. किसानों का बिगुल : उल्फत सिंह चौहान निर्भय, जीतमल लूणिया सस्ता साहित्य मंडल, अजमेर, 1930.
12. किसानों पर अत्याचार : पंडित प्राणनाथ विद्यालंकार, मानमंदिर, बनारस, 1921.

*Corresponding Author: डॉ० अशोक कुमार